॥ श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् ॥

गोसेवा

श्रीहरिदास निवास गोशाला

श्रीहरिदास निवास

प्राचीन कालीदह, वृन्दावन (मथुरा) उ० प्र०
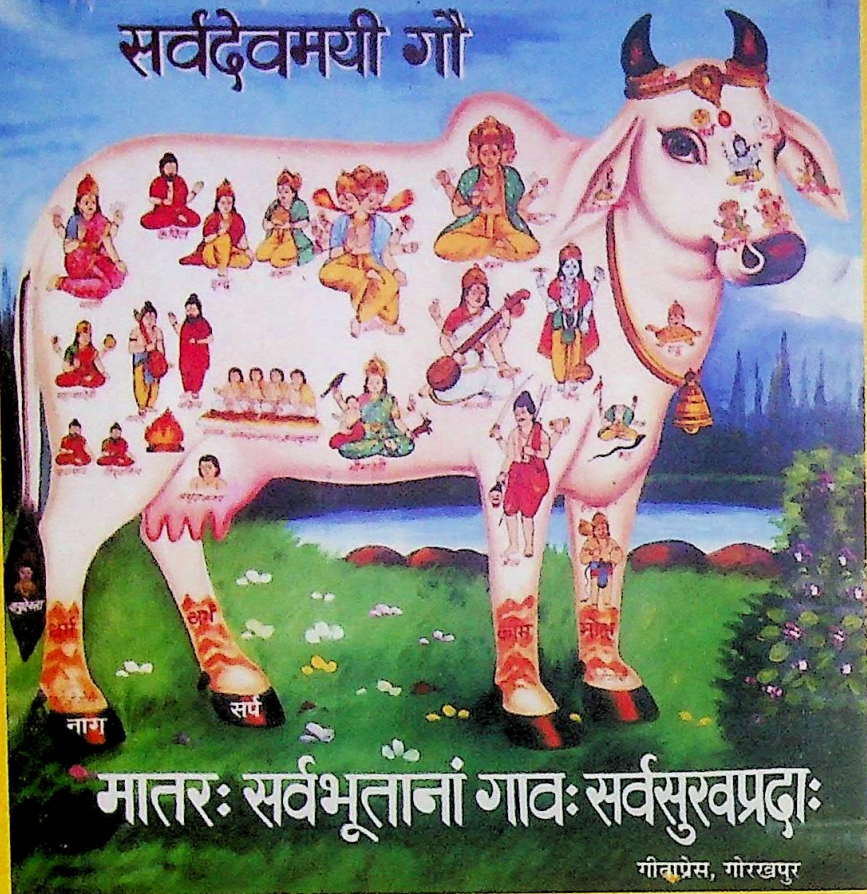
गवां हि तीर्थे वसतीह गङ्गा पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मीः करीषे प्रणतौ च धर्मस्तासां प्रणामं सततं च कुर्यात्॥

(विष्णुधर्मोत्तरपुराण द्वितीय खण्ड ४२ / ५८)

गोरूपी तीर्थ में गंगा आदि सभी नदियाँ तथा तीर्थ निवास करते हैं और गौओं के रजःकण में सभी प्रकार की निरन्तर वृद्धि होने वाली धर्म-राशि एवं पुष्टि का निवास रहता है। गायों के गोबर में साक्षात् भगवती लक्ष्मी निरन्तर निवास करती हैं और इन्हें प्रणाम करने से चतुष्पाद धर्म सम्पन्न हो जाता है। अतः बुद्धिमान् एवं कल्याणकामी पुरुष को गायों को निरन्तर प्रणाम करना चाहिए।

❖ श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् ❖

गोसेवा
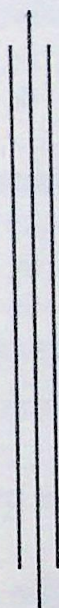
बृजभूषण दास

प्रकाशक :

श्रीहरिदास शास्त्री

(न्याय-वैशेषिकशास्त्रि, न्यायाचार्य, काव्य, व्याकरण, सांख्य, मीमांसा वेदान्त, तर्क, तर्क, न्याय, वैष्णवदर्शनतीर्थ, विद्यारत्न आदि उपाधियों से अलंकृत)

श्रीहरिदास निवास, प्राचीन कालीदह, वृन्दावन (मथुरा) उ. प्र.

फोन : ०५६५-३२०२३२२, ३२०२३२५

प्रकाशन तिथि :

श्रीगोपाष्टमी (६ नवम्बर २००८)

श्रीगौरांगाब्द : ५२३

प्रथमसंस्करणम्

गोसेवा हेतु न्यौछावर :

४०) रुपया मात्र

मुद्रक :

श्रीगदाधर गौरहरि प्रेस

(श्रीहरिदास निवास)

प्राचीन कालीदह, वृन्दावन (मथुरा) उ. प्र.

विषय सूची

प्रश्नावली जिनका उत्तर इस पुस्तिका में दिया गया है :-

प्रश्न-१ कृष्ण गोसेवा क्यों करते हैं?

प्रश्न-२ कृष्ण कहाँ निवास करते हैं?

प्रश्न-३ कृष्ण का गो के साथ क्या सम्बन्ध है?

प्रश्न-४ गो की विशेष मान्यता क्यों है?

प्रश्न-५ गो की पहचान कैसे करें?

प्रश्न-६ गो और गवय के बीच क्या भेद है?

प्रश्न-७ गोहत्या करने वालों की क्या गति होती है?

प्रश्न-८ गो को कैसे प्रसन्न किया जा सकता है?

प्रश्न-९ गो हत्यारों के प्रति श्रीकृष्ण का व्यवहार कैसा होता है?

प्रश्न-१० गो सेवा के अधिकारी कौन हैं?

प्रश्न-११ गो सेवा के विषय में अधिक शिक्षा कहाँ प्राप्त की जा सकती है?

प्रश्न-१२ मृत्यु के पश्चात् गायों की क्या गति होती है? क्या वे कृष्ण के साथ निवास करती हैं?

❖

।। श्रीश्री गौरगदाधरौ विजयेताम् ।।

मङ्गलाचरण

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः।
बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाहन्ये ते नमः।।

हे अबध्य गो! उत्पन्न होते समय तुम्हें नमस्कार और उत्पन्न होने पर भी तुम्हें प्रणाम। तुम्हारे शरीर, रोम और खुरों को भी प्रणाम।

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।

श्रीमती गौओं को नमस्कार। कामधेनु की सन्तानों को नमस्कार। ब्रह्माजी की पुत्रियों को नमस्कार। पावन करने वाली गोसमूह को नमस्कार।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत्स्थावर जङ्गमम्।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्यमातरम्।।

जिस गो से यह स्थावर-जंगम अखिलविश्व व्याप्त है, उस भूत और भविष्य की माता गो को मैं सिर झुका करके प्रणाम करता हूँ।

❖

।। श्रीश्री गौरगदाधरौ विजयेताम् ।।

भूमिका

प्रत्येक प्राणी आनन्द प्राप्ति की खोज में लगा हुआ है। इस दुःख से परिपूर्ण संसार में शाश्वत आनन्द प्राप्ति का केवल एक ही उपाय है। वह उपाय है-मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को पाँचभौतिक शरीर से भिन्न आत्मा के रूप में पहचान करके सृष्टिकर्ता की अनुकूलता पूर्वक सेवा करे।

भगवान श्रीकृष्ण समस्त ब्रह्माण्डों के सृष्टिकर्ता व पालनकर्ता हैं। प्रत्येक आत्मा उन्हीं का नित्य अंश है। यह आत्मा उन श्रीकृष्ण के प्रति उन्मुख होकर के शाश्वत आनन्द की प्राप्ति कर सकता है। इस भगदुन्मुखता को छोड़ करके आनन्द प्राप्ति का कोई अन्य उपाय नहीं है।

भगदुन्मुखता, उत्तमा भक्ति अथवा सेवा का अभिप्राय यह है कि केवल सेव्य की प्रसन्नता को लक्ष्य करके समस्त कार्य किये जाये। इसलिए मानव के लिए आवश्यक है कि वह ईश्वर की सेवा एकमात्र उनकी व उनसे सम्बन्धित समस्त वस्तुओं (गुरु, गो, जीवमात्र आदि) के प्रसन्नता व सुख के लिए कार्य करे न कि अपने स्वार्थ से।

भगवान श्रीकृष्ण गो को अतिशय प्रेम करते हैं। सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय गो के प्रति उनके समर्पण व सेवा के वर्णन से भरा हुआ है। उनका एकमात्र निवास स्थान गोकुल है जोकि गायों की वास स्थली है। कृष्ण के समस्त परिकर, गोप-गोपी, गोवर्द्धन पर्वतादि सभी गोसेवा में संलग्न रहते हैं। वे गायों की रक्षा व पोषण करने तथा आनन्दित करने के कारण गोविन्द और गोपाल के नाम से भी जाने जाते हैं।

गो ईश्वर की विशुद्ध सात्विक, निरपराधी और उपकारी रचना है। यह सर्वदा दूसरों का कल्याण करती है तथा किसी को भी किसी प्रकार से हानि नहीं पहुँचाती है। ईश्वर ने इनकी रचना सबके कल्याण के लिए किया है। गो के अन्दर वे समस्त गुण पाये जाते हैं जो ईश्वर में पाये जाते हैं। वे अति सरल और सबकी विश्वासपात्र होती

हैं। गो की संरक्षण व संवर्द्धन की महती आवश्यकता है। गोसेवा का अभिप्राय है गो कि हर प्रकार से स्नेहपूर्वक देखभाल, संरक्षण एवं संवर्द्धन करना। इससे श्रीकृष्ण शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं और एक बार उनके प्रसन्न होने पर समस्त कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। इस पुस्तिका में गोसेवा के रहस्य, महत्व आदि का वर्णन शास्त्रीय प्रमाण के साथ किया गया है। यह पुस्तिका श्रीमाध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय के आचार्य श्रीहरिदास शास्त्रीजी महाराज की कृपा से सम्भव हो सकी है। महाराजजी वैदिक वाङ्मय के प्रसिद्ध विद्वान हैं। इन्होंने लगभग ८२ संस्कृत ग्रन्थों को हिन्दी व बंगला भाषा में प्रकाशित करके लोगों का बड़ा उपकार किया है। महाराजजी वृन्दावन में सतत गोसेवा में लगे हुए हैं।

(गो अथवा गायशब्द से गोमाता को समझने के साथ-साथ बैल-साँड़ व बछड़ा-बछिया को भी समझना चाहिए)

❖

श्रीकृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण और शास्त्रों को छोड़कर स्वतन्त्ररूप से गोसेवा के आदर्श को समझना सम्भव नहीं है। श्रीकृष्णलीला में गो के महत्व का वर्णन करने वाले कतिपय श्लोकों को नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है-

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

(विष्णुपुराण १-१६-६५)

मैं भगवान श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ, जो गो और ब्राह्मणों का हित करने वाले हैं। वे सम्पूर्ण जगत् का भी मंगल करने वाले हैं। गायों को सर्वदा आनन्द प्रदान करने वाले भगवान को मैं पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

पूर्वोक्त श्लोक में प्रयुक्त शब्द 'गो-ब्राह्मण हिताय' से ध्वनित होता है कि भगवान गो के कल्याण में विशेष रूप से संलग्न रहते हैं तथा उन्हें ब्राह्मणों से भी पहले पूज्य मानते हैं। भगवान श्रीकृष्ण सृष्टिकर्ता व उसके पालनकर्ता होते हुए भी स्नेहपूर्वक गोदुग्ध पान करते हैं। वे इसे इतना पसन्द करते हैं कि गाय के थन से बछड़े की तरह मुख लगाकर पीते हैं। इसीलिए कहा गया है-

"मातरः सर्वभूतानाम् गावः सर्व-सुख प्रदा।"

अर्थात् "गो सबकी माता व सबको सुख प्रदान करने वाली है।"

श्रीकृष्ण की समस्त लीलाओं में गो का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी गोप्रधान बाललीला की एक झाँकी नीचे प्रस्तुत है-

यर्ह्यङ्गनादर्शनीय कुमार लीला-
वन्तर्व्रजे तदबलाः प्रगृहीतपुच्छैः।

वत्सैरितस्तत उभावनुकृष्यमाणौ
प्रेक्ष्यन्त्य उज्झितगृहा जहृषुर्हसन्त्यः।।

(श्रीमद्भागवत महापुराण१०-८-२४)

जब कृष्ण और बलराम दोनों कुछ और बड़े हुए तब ब्रज में घर के बाहर ऐसी-ऐसी बाललीलाएँ करने लगे, जिन्हें गोपियाँ देखती रह जाती। जब वे किसी बैठे हुए बछड़े की पूँछ पकड़ लेते और बछड़े डरकर इधर-उधर भागते, तब वे दोनों और जोर से पूँछ पकड़ लेते और बछड़े उन्हें घसीटते हुए दौड़ने लगते। यशोदादि गोपियाँ अपने घर का काम-काज छोड़कर यह सब देखकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो जातीं।

कृष्ण जो कि सबके सेव्य हैं, गो उनकी भी सेव्य हैं। कृष्ण, जो कि समस्त आनन्द के स्रोत हैं, गायों की सेवा व संरक्षण संवर्द्धन के द्वारा आनन्द प्राप्त करते हैं।

गोविन्द और उनके परिकर

कृष्ण स्वयं भगवान हैं। वे समय-समय पर स्व आचरण द्वारा लोगों को धर्म (कर्तव्यता, अनुशासन और नैतिकता) की शिक्षा देने के लिए इस जगत में प्रकट होते हैं।

जो कुछ भी कृष्ण से सम्बन्धित पदार्थ हैं वे सभी गो से भी सम्बन्धित हैं। कृष्ण का नाम गोपाल (गो का पालन करने वाला) और गोविन्द (गो को आनन्द प्रदान करने वाला) भी है क्योंकि वे सदा गो की सेवा व रक्षा में संलग्न रहते हैं। कृष्ण गोवर्द्धन की गो सेवा से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने गोवर्द्धन पर्वत को अपने समान बना दिया।

गोवर्धन :-

हन्तायमद्रिरबला हरिदासवर्य्यो
यद् रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः।
मानं तनोति सहगोगणयोस्तयोर्यत्
पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः।।

(श्रीमद्भागवतम् १०-२१-१८)

हे गोपियों! यह गिरिराज गोवर्धन तो भगवान् के भक्तों में बहुत ही श्रेष्ठ है। धन्य हैं इसके भाग्य, देखती नहीं हो, हमारे प्राणवल्लभ श्रीकृष्ण और नयनाभिराम बलराम के चरण कमलों का स्पर्श प्राप्त करके, यह कितना आनन्दित रहता है। इसके भाग्य की सराहना कौन करे? यह तो उन दोनों को, ग्वालबालों और गौओं का बड़ा ही सत्कार करता है। स्नानपान के लिए झरनों का जल देता है, गौओं के लिए सुन्दर हरी-हरी घास प्रस्तुत करता है। विश्राम के लिए कन्दराएँ और खाने के लिए कन्दमूलफल देता है। वास्तव में यह धन्य है।

"गोवर्द्धनो जयति शैलकुलाधिराजो
यो गोपिकाभिरुदितो हरिदासवर्य्यः।

कृष्णेन शक्रमखभङ्गकृतार्चितो यः
सप्ताहमस्यकरपद्‌मतलेऽप्यवात्सीत्।।

श्रीवृहद्‌भागवतामृतम् १/१/७

वह गोवर्द्धन सर्वोत्कर्ष से विराजमान हो रहे हैं जो समस्त पर्वतों के राजाधिराज हैं, जिन्हें गोपियाँ 'हरिदासवर्य' अर्थात् हरि के भक्तों में श्रेष्ठ कहकर पुकारती हैं, इन्द्रयज्ञविध्वंसकारी भगवान कृष्ण ने जिनकी अर्चना की तथा जो निरन्तर एक सप्ताह तक श्रीकृष्ण के कर-कमलों पर निवास किये।

गोकुल, गोलोक व वृन्दावन

गोकुल, गोलोकादि वह स्थान है जहाँ श्रीकृष्ण निवास करते हैं। इनका अर्थ है-गो का निवास स्थान।

गोप और गोपी

गोप-गोपी भगवान श्रीकृष्ण के प्रिय भक्त हैं। इनकी गोनिष्ठा का पता इस बात से चलता है कि इनका परिचय ही गो से सम्बन्धित अर्थात् गोप-गोपी के रूप में हैं।

गोसेवा

'गोसेवा' शब्द 'गो' और 'सेवा' दो शब्दों से मिलकर बना है। गोसेवा शब्द के वास्तविक अर्थबोध के लिए सर्वप्रथम इसके दोनों शब्दों (गो और सेवा) का अलग-अलग अर्थ समझना आवश्यक है।

सेवा-

यहाँ सेवा शब्द का अभिप्राय है सेव्य का अनुकूल रूप में अनुशीलन करना अर्थात् उसका जो मंगलकारक हो, रुचिकर हो उस प्रकार की चेष्टा करना व भाव रखना। इस प्रकार की सेवा के लिए सेवक में त्याग, समर्पण और सेवा (भक्ति) होनी चाहिए।

इस प्रकार की सेवा में सेवक का सेव्य के साथ एकता का सम्बन्ध तथा अनुकूलता का व्यवहार होता है। यह निष्कपट एकता और अनुकूलता अर्थात् उत्तम सेवा का सम्बन्ध भगवान श्रीकृष्ण के सेवकों व उनके बीच पाया जाता है।

सेवक सेवा के बदले में ईश्वर से एकमात्र सेवा प्राप्ति की ही अभिलाषा रखता है। वह मोक्ष को इस सेवा के समक्ष कुछ भी नहीं समझता है। वह सेवा से प्रभु को परमानन्दित करके अनायास ही परमानन्द प्राप्त करता है, अतएव सेवा परम पुरुषार्थ है।

गो-

गो का लक्षण करते हुए लिखा गया है 'गोः सास्नादिमत्वम्' अर्थात् जो गलकम्बल (गले में कम्बल के समान झूलती हुई चमड़ी) से युक्त है। इस प्रकार से लक्षण युक्त जो गो है व भारत में पायी जाती है। भारत में इसे देशी गाय के रुप में भी जाना जाता है।

निरपराधी और उपकारी-

कोई भी पूज्य बनता है अपने श्रेष्ठ गुण और कर्म के कारण। ईश्वर भी

इसीलिए सबके पूजनीय होते हैं। वे निरपराधी अर्थात् किसी को हानि पहुँचाने वाला कार्य नहीं करते हैं तथा सदैव दूसरे के उपकार में लगे रहते हैं। गो के अन्दर ये दो गुण प्रधान रूप से पाये जाते हैं। ईश्वर ने गाय की रचना इस प्रकार से की है कि वह अपने इन दो गुणों से मनुष्य के लिए आदर्श बनी। गो किसी को किसी प्रकार से हानि न पहुँचा करके सदा सबका उपकार करती है। वह जो दुग्ध प्रदान करती है उससे लोगों का पोषण, यज्ञादि कार्य सम्पन्न होते हैं। बैल कृषि कार्यादि के द्वारा समाज का उपकार करते हैं । इनके गोबर से धरती उपजाऊँ बनकर प्रचुर अन्न प्रदान करती है। यह हर प्रकार से पर्यावरण को शुद्ध करती है। इस प्रकार गो मानव के लिए आदर्श स्वरूप है।

गोसेवा-

पूर्व में गो और सेवा का वर्णन किया गया। इस प्रकार अब गोसेवा का निम्न अर्थ प्रकट होता है-

"गलकम्बल से युक्त जो गो है उनका जब अनुकूलता पूर्वक अनुशीलन किया जाता है तो उसे गोसेवा कहते हैं। इसमें गोसेवक की समस्त चेष्टाएँ गो को सुखी करने,रक्षा करने, परिचर्या करने के लिए होती हैं।" इस गोसेवा से प्रभु सत्वर प्रसन्न होते हैं।

❖

गोसेवा परम धर्म है

धर्म वह है जिससे सबकी रक्षा व पोषण होता है। धार्मिक होने के लिए व्यक्ति में कर्तव्यता, नैतिकता और अनुशासन की आवश्यकता होती है। यदि कोई व्यक्ति सच्चाई के साथ गोसेवा करता है तो उसके अन्दर पूर्वोक्त कर्तव्यादि तीनों गुणों का विकास होता है और वह परम धार्मिक बन करके गो सेवा करते हुए यथाशक्ति सबकी रक्षा व पोषण करता है। इस प्रकार गोसेवा परम धर्म है।

गोसेवा उत्तमा भक्ति है

गोसेवा उत्तमा भक्ति का प्रधान अंग है। उत्तमाभक्ति को परिभाषित करते हुए श्रीलरूपगोस्वामी ने श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु में लिखा है-

अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञानकर्माद्यनावृतम्।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमा।।

"भक्तिभिन्न अभिलाषिता से रहित, मोक्षानुसन्धान व सकाम कर्मों आदि से अबाधित, अनुकूलतापूर्वक जो कृष्ण का अनुशीलन है उसे उत्तमा भक्ति कहते हैं।"

इस उत्तमा भक्ति को भक्त के व्यावहारिक जीवन में प्रदर्शित करते हुए कहा गया है कि-

तृप्तावन्यजनस्य तृप्तिमयिता दुःखे महादुःखिताः,
लब्धैः स्वीयालिदुःखनिचयैर्नोहर्षबाधोदयाः।
स्वेष्टाराधन तत्परा इह यथा श्रीवैष्णव श्रेणयः,
कास्ता ब्रूहि विचार्य चन्द्रवदने ता मद्वयस्या इमाः।।

(श्रीगोविन्दलीलामृतम् १३।११३)
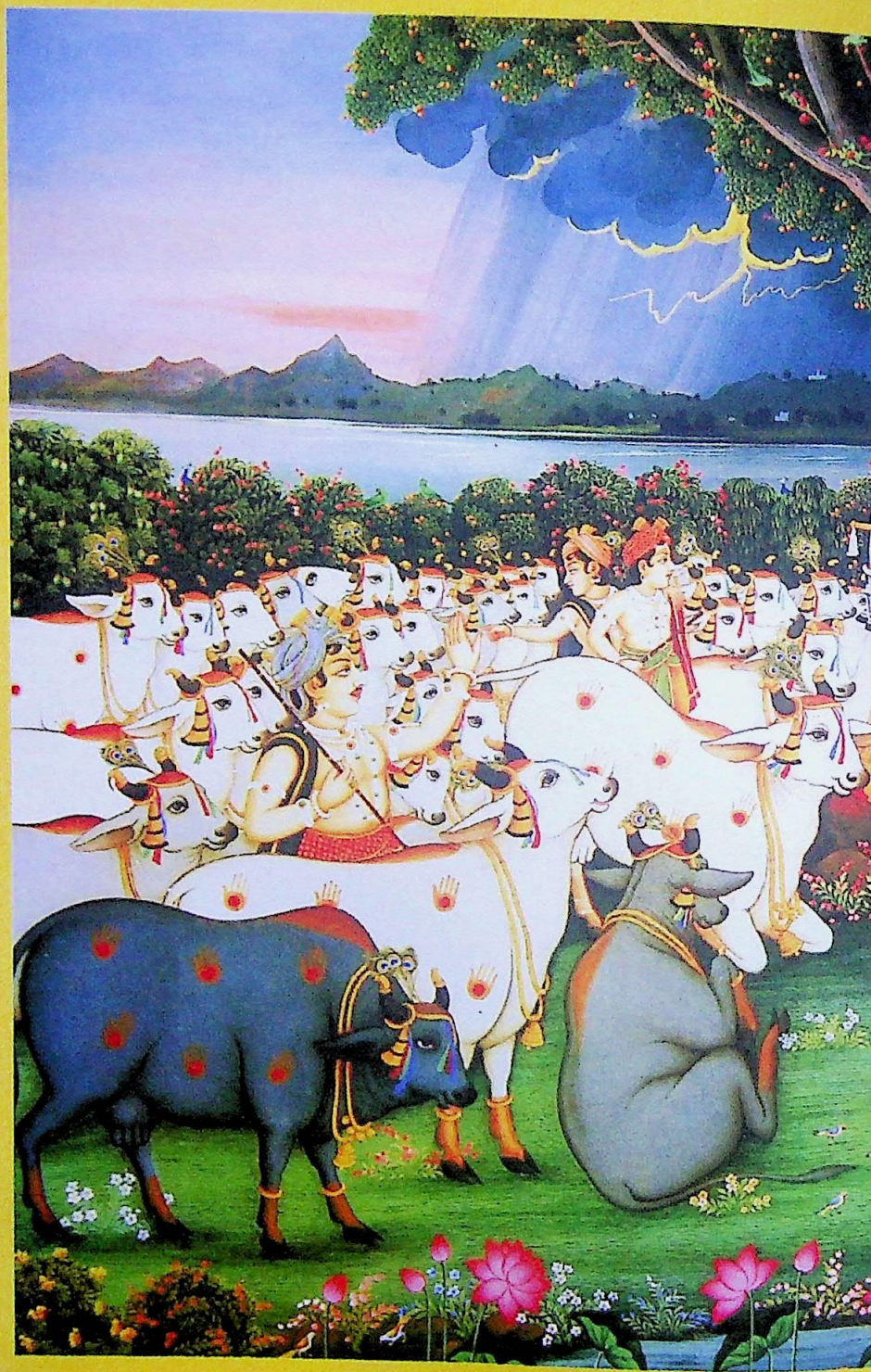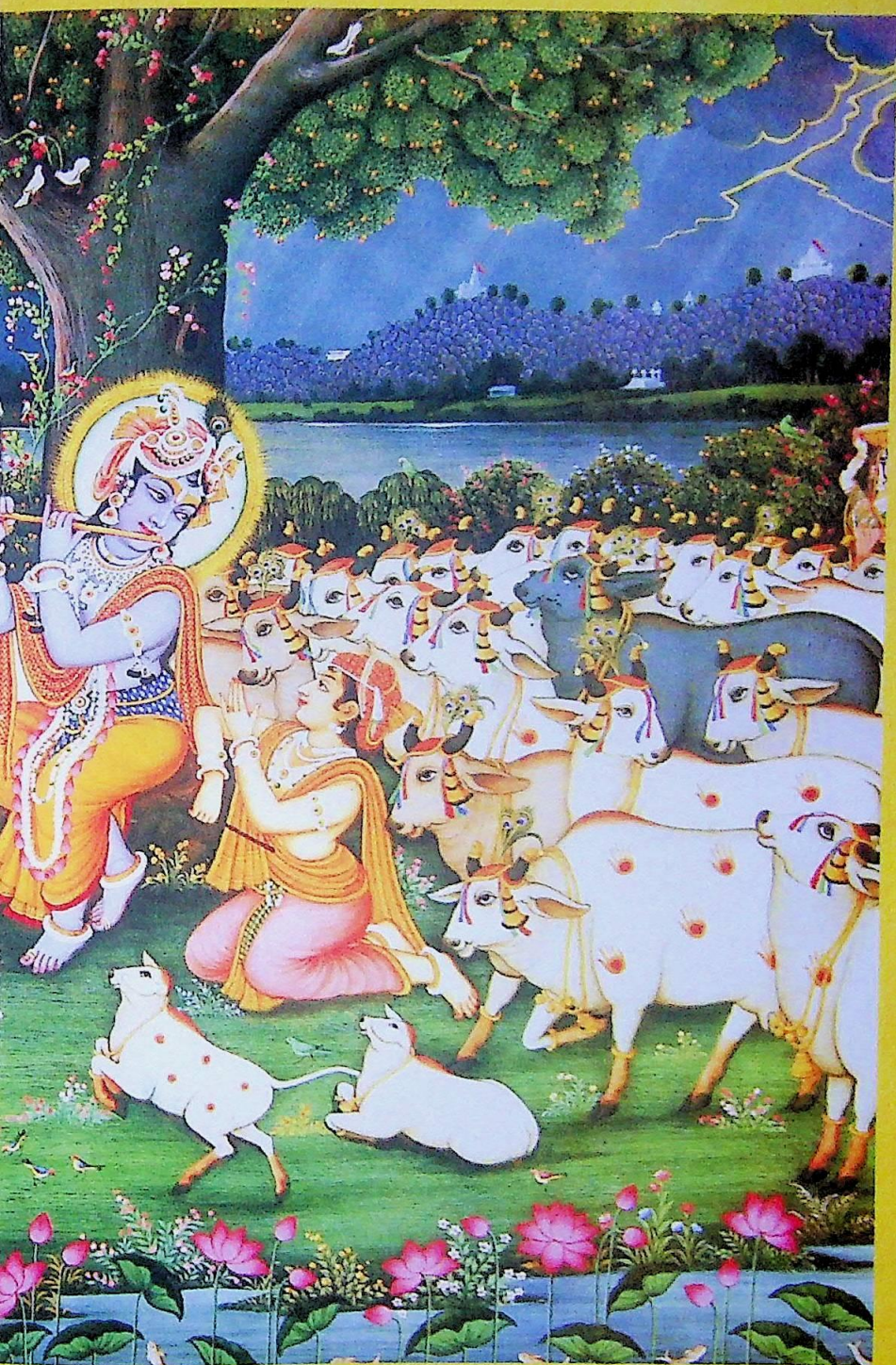
गाय भगवान की भी भगवान है।

"अन्यजन की तृप्ति से तृप्त, दुःख से दुःखित, निज सुख-दुःख की प्राप्ति से न सुखी न दुःखी, निज इष्ट देव की आराधना में तत्पर श्रीवैष्णवगण जिस प्रकार होते हैं, उस प्रकार स्वभावाक्रान्त ही मेरी वयस्यागण हैं।"

आराधना में गो की आराधना सर्वश्रेष्ठ है। इससे श्रीकृष्ण शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

मानवमात्र इस गोसेवा का अधिकारी है। गोपाल भक्तों के लिए तो यह शीघ्र ही इष्ट सिद्धि करने वाली है। जैसा कि कहा गया है-

गव कण्डूयनं कुर्य्याद् गोग्रासं गोप्रदक्षिणम्।
गोषु नित्यं प्रसन्नासु गोपालोऽपि प्रसीदति।।

गो के अंग में विद्यमान वाह्य कीट को हटाना चाहिए, उनको भोजन प्रदान करना चाहिए तथा उनकी परिक्रमा करनी चाहिए। गो को नित्य प्रसन्न रखने से शीघ्र ही गोपाल भी प्रसन्न हो जाते हैं।

❖

गो सेवा का माहात्म्य

वैदिक वाङ्मय गोसेवा के माहात्म्य से भरा पड़ा है। गोसेवा के कतिपय लाभ का वर्णन यहाँ आगे किया जा रहा है-

गोसेवा से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है-

पितृसद्मानि सततं देवतायतनानि च।

पूयन्ते शकृता यासां पूतं किमधिकं ततः।।

घासमुष्टिं परगवे दद्यात् संवत्सरं तु यः।

अकृत्वा स्वयमाहारं व्रतं तत् सार्वकामिकम्।।

(महाभारत अनुशासन पर्व अध्याय ६८)

जिनके गोबर से लीपने पर देवताओं के मन्दिर तथा पितरों के श्राद्ध स्थान पवित्र होते हैं, उनसे बढ़कर पावन और क्या हो सकता है? जो एकवर्ष तक प्रतिदिन स्वयं भोजन से पहले दूसरे की गाय को घास प्रदान कर तुष्ट करता है, उसका वह व्रत समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है।

गोसेवा से समस्त पाप नष्ट होते हैं-

गां च स्पृशति यो नित्यं स्नातो भवति नित्यशः।

अतो मर्त्यः प्रपुष्टैस्तु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

गवां रजः खुरोद्भूतं शिरसा यस्तु धारयेत्।

स च तीर्थजले स्नातः सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

(पद्मपुराण सृष्टिखण्ड ५७।१६४,१६५)

जो मनुष्य प्रतिदिन स्नान करके गो का स्पर्श करता है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। जो गौओं के खुरों से उड़ी हुई धूलि को शिर पर धारण करता है वह मानों तीर्थ के जल में स्नान कर लेता है और समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

गोभक्त के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है-

महाभारत अनुशासन पर्व ८३/५०-५२ में लिखा है-

गोषु भक्तश्च लभते यद् यदिच्छति मानवः।

स्त्रियोऽपि भक्ता या गोषु ताश्च काममवाप्नुयुः।।

पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी तामवाप्नुयात्।

धनार्थी लभते वित्तं धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात्।।

विद्यार्थी चाप्नुयाद् विद्यां सुखार्थी प्राप्नुयात् सुखम्।

न किंचिद् दुर्लभं चैव गवां भक्तस्य भारत।।

गोभक्त मनुष्य जिस-जिस वस्तु की इच्छा करता है, वह सब उसे प्राप्त होता है। स्त्रियों में भी जो गोभक्त हैं, वे मनोवाञ्छित कामनाऐं प्राप्त कर लेती हैं। पुत्रार्थी मनुष्य पुत्र पाता है और कन्यार्थी कन्या। धन चाहने वाले को धन और धर्म चाहने वाले को धर्म प्राप्त होता है। विद्यार्थी विद्या पाता है और सुखार्थी सुख। भारत! गोभक्त के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

❖

गोसेवा से समस्त देवी-देवता प्रसन्न होते हैं

भारत में लोग अपनी विविध मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए नाना प्रकार के देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। ये समस्त देवी-देवता गो के शरीर में नित्य निवास करते हैं अतः गो की सेवा से समस्त देवी-देवता प्रसन्न होकर गोभक्त की समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं।

शृंगमूले स्थितो ब्रह्मा शृंगमध्ये तु केशवः।
शृंगाग्रे शंकरं विद्यात् त्रयो देवाः प्रतिष्ठिताः।।
शृंगाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च।
सर्वे देवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौः।।
ललाटाग्रे स्थिता देवी नासामध्ये तु षण्मुखः।
कम्बलाश्वतरौ नागौ तत्कर्णाभ्यां व्यवस्थितौ।।
स्थितौ तस्याश्च सौरभ्याश्चक्षुषोः शशिभास्करौ।
दन्तेषु वसवश्चाष्टौ जिह्वायां वरुणः स्थितः।।
सरस्वती च हुंकारे यमयक्षौ च गण्डयोः।
ऋषयो रोमकूपेषु प्रस्रावे जाह्नवीजलम्।।
कालिन्दी गोमये तस्या अपरा देवतास्तथा।
अष्टाविंशतिदेवानां कोट्यो लोमसु ताः स्थिताः।।
उदरे गार्हपत्योऽग्निर्हृदये दक्षिणस्तथा।
मुखे चाहवनीयस्तु सभ्यावसथ्यौ च कुक्षिषु।।
एवं यो वर्तते गोषु ताडनक्रोधवर्जितः।
महतीं श्रियमाप्नोति स्वर्गलोके महीयते।।

(बृहत्पराशरस्मृति ५।३४-४१)

गौओं के सींगों के मूल में ब्रह्माजी और दोनों सींगों के मध्यमें भगवान् नारायण का निवास है। सींग के शिरोभाग में भगवान् शिव का निवास जानना चाहिये।

इस प्रकार ये तीनों देवता गो के सींग में प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त सींग के अग्रभाग में चर तथा अचर सभी तीर्थ विद्यमान रहते हैं। इसी प्रकार सभी देवता गो के शरीर में निवास करते हैं, अतः गो सर्वदेवमयी है। गौ के ललाट के अग्रभाग में देवी पार्वती तथा नाक के मध्य में कुमार कार्तिकेय का निवास है। गो के दोनों कानों में कम्बल और अश्वतर नाम के दो नाग निवास करते हैं और उस सुरभी गो के दाहिनी आँख में सूर्य और बायीं आँख में चन्द्रमा का निवास है। दाँतों में आठों वसु और जिह्वा में भगवान् वरुण प्रतिष्ठित हैं। गो के हुंकार में भगवती सरस्वती निवास करती हैं और गण्डस्थलों (गाल) में यम और यक्ष निवास करते हैं। गो के सभी रोमकूपों में ऋषिगणों का निवास है तथा गोमूत्र में भगवती गङ्गा के पवित्र जल का निवास है और गोमय (गोबर) में भगवती यमुना तथा सभी देवता प्रतिष्ठित हैं। अट्ठाईस करोड़ देवता उसके रोमकूपों में स्थित हैं। गो के उदर-देश में गार्हपत्य अग्नि का निवास है और हृदय में दक्षिणाग्नि का निवास है। मुख में आहवनीय नामकी अग्नि तथा कुक्षियों में सभ्य एवं आवसथ्य नामक अग्नियाँ निवास करती हैं। इस प्रकार गाय के शरीर में सभी देवताओं को स्थित समझकर जो कभी उनके ऊपर क्रोध तथा प्रताड़ना नहीं करता है वह महान् ऐश्वर्य को प्राप्त करता है और स्वर्गलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

गो का संरक्षण व संवर्द्धन

धन लोलुपता और इन्द्रिय तृप्ति प्रधान जीवन शैली होने के कारण आज का मनुष्य प्रकृति के उन नियमों, अनुशासनादि की अवहेलना कर रहा है जो सबके लिए हितकारी हैं। वह अपने भोगवासना की पूर्ति के लिए प्रकृति का अन्धाधुन्ध शोषण कर रहा है। गो भी इस दुष्ट प्रवृत्ति का शिकार है। यहाँ तक कि भारत में भी जहाँ पर गो को पूजनीय माना जाता है, उसे माँस और चमड़े की प्राप्ति के लिये बध किया जा रहा है। इसका कारण है भौतिकवादी शिक्षा, जिसमें अर्थ और काम के लिए व्यक्ति कुछ भी करने से नहीं झिझकता।

आज भारत विश्व में माँस का प्रमुख निर्यातक देश बन गया है। यह भयावह और बड़े शर्म की बात है। कृष्ण ने मनुष्य की रचना अपने प्रतिनिधि के रूप में की है। उन्होंने मनुष्य को ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति व ज्ञान का स्रोत प्रदान किया है ताकि वह ज्ञान से युक्त होकर सबके उपकार के लिए कार्य करे। लेकिन मानव समाज के दुष्प्रवृत्ति को देखकर कृष्ण और उनके भक्तों की अप्रसन्नता स्वाभाविक है।

गोवध करने वालों को मिलने वाले कठोर दण्ड का वर्णन शास्त्रों में किया गया है। श्रीचैतन्य महाप्रभु जो स्वयं श्रीकृष्ण हैं इन्होंने कहा है-

"गोवध करने वाले, उसका माँस खाने वाले उतने सहस्र वर्ष तक नरक में कठोर यातना प्राप्त करते हैं जितना कि उस भक्षण की गयी गाय के शरीर में रोम होते हैं।"

(श्रीचैतन्यचरितामृत आदि लीला १७/१६६)

गो सरल, निरपराधी और सर्वोपकारी ईश्वरीय रचना है। आज आवश्यकता है इनके संरक्षण की उन भौतिकवादी लोगों से जो इनको समाप्त कर रहे हैं। आज गोवंश की संख्या बहुत ही कम रह गई है अतः आवश्यकता इस बात की भी है कि इनको लुप्त होने से बचाने के लिए इनके संवर्द्धन का भी पुरजोर प्रयास किया जाये।

❖

श्रीहरिदास निवास गोशाला

गोशाला वह स्थान होता है जहाँ गायें निवास करती है, तथा जहाँ पर उनका संरक्षण व सम्वर्द्धन होता है। श्रीहरिदास निवास गोशाला, वृन्दावन के पुरानी कालीदह नामक स्थान पर स्थित है।

कालीदह वृन्दावन में स्थित प्राचीन तीर्थस्थल है। आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण कालीदह में स्थित कालियनाग को निर्वासित करके यहाँ के जल को शुद्ध करके गोगण आदि की रक्षा किये थे। वर्तमान में इसी स्थान पर जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने कालियनाग लीला की, श्रीहरिदासशास्त्रीजी महाराज का आश्रम और गोशाला स्थित है।

श्रीहरिदास निवास गोशाला में लगभग २२० गाये हैं। यहाँ गो की सेवा प्रीतिपूर्वक सेव्य सेवक भाव से की जाती है। यह गोशाला लगभग ३५ वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई थी जब महाराजजी को एक गाय दान के रूप में मिली। उसी एक गाय की वंशज वर्तमान की समस्त २२० गायें हैं। इनमें लगभग ६० साँड़ व बछड़े हैं। यहाँ गोमाता के समान ही साँड़ों की सेवा की जाती है। महाराजजी जो कि वैदिक वाङ्मय के सुप्रसिद्ध विद्वान हैं और श्रीमाध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय के अनेकों ग्रन्थों का अनुवाद व प्रकाशन किये हैं। आज वृद्धावस्था में भी उत्साहपूर्वक गोसेवा में लगे हुए हैं।

गोवंश की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए वृन्दावन शहर के समीप तेहरा नामक गाँव में लगभग ग्यारह एकड़ जमीन खरीदा गया है। जहाँ नवीन गोशाला का निर्माण हुआ है। महाराजजी प्रतिदिन सर्दी, गर्मी, वर्षा आदि का परवाह किये बिना, गोसेवा के लिए वहाँ जाते हैं।

श्रीहरिदास निवास गोशाला में गोसेवा निःस्वार्थ भाव से प्रीतिपूर्वक, बिना किसी व्यावसायिक उद्देश्य से किया जाता है। गोदुग्ध की बिक्री कभी भी नहीं होता है। बछड़े इच्छानुसार दुग्धपान करते हैं। गो को उत्तम गुणवत्ता का चारा, भूसा, आटा,

जल, लड्डू आदि प्रदान किया जाता है। अधिक क्या लिखें यहाँ की गोसेवा दर्शनीय व अनुसरणीय है।

महाराजजी अपने आचरण से लोगों को शिक्षा देते हैं। वैदिक वाङ्मय के सुप्रसिद्ध विद्वान होकर, एकमन से गोसेवा के द्वारा लोगों को इस बात की शिक्षा दे रहे हैं कि गो सेवा से श्रीकृष्ण प्रसन्न होते हैं। वे प्रीतिपूर्वक, हर परिस्थिति में बिना किसी क्षोभ के प्रत्येक गाय की व्यक्तिगत रूप से देखभाल करते हैं। आज ६० वर्ष से भी अधिक उम्र में सतत गोसेवा कर रहे हैं। समाज को शिक्षित करने का यह वास्तविक विधि है।

वैदिक वाङ्मय में कहा गया है कि गुरु शास्त्र में निष्णात होने के साथ-साथ परब्रह्म में भी निष्णात (अनुभवी) हों। परब्रह्म का अनुभव शास्त्रीय आचरण पर निर्भर करता है। महाराजजी शास्त्रीय आचरण के मूर्त रूप हैं।

यहाँ श्रीगदाधरगौर एवं श्रीराधागोविन्ददेवजी का मन्दिर भी है। श्रीश्रीगौरगदाधर ग्रन्थागारम् नामक विशाल ग्रन्थागार भी है। श्रीगदाधर गौरहरि प्रेस नामक एक प्रेस भी है, जिससे महाराजजी ने अब तक लगभग ८२ ग्रन्थों को संस्कृत, हिन्दी, बंगला एवं अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किया है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न-१ कृष्ण गोसेवा क्यों करते हैं?

उत्तर- कृष्ण प्रीतिपूर्वक गोसेवा इसलिए करते हैं क्योंकि वह निरपराधी और उपकारी है । वह किसी को किसी भी प्रकार से हानि नहीं पहुँचाती है तथा हर प्रकार से सबका कल्याण करती है।

प्रश्न-२ कृष्ण कहाँ निवास करते हैं?

उत्तर- गो का निवास स्थल ही कृष्ण का निवास स्थल है।

प्रश्न-३ कृष्ण का गो के साथ क्या सम्बन्ध है।

उत्तर- कृष्ण गायों के बिना नहीं रहते हैं। जहाँ-जहाँ गो रहती हैं वहाँ-वहाँ कृष्ण रहते हैं। कृष्ण के परिकर जैसे गोवर्धन पर्वत आदि भी भोजन, जल, छाया आदि प्रदान करके गोसमूह को प्रसन्न करते रहते हैं।

प्रश्न-४ गो की विशेष मान्यता क्यों है?

उत्तर- गो ईश्वर की एक श्रेष्ठ रचना है। यह सबके लिए आदर्श स्वरूप है। श्रीकृष्ण के समान यह भी निरंतर सबके उपकार में संलग्न रहती है तथा किसी को किसी भी प्रकार से हानि नहीं पहुँचाती है। इसलिए गो की विशेष मान्यता है।

प्रश्न-५ गो की पहचान कैसे करें?

उत्तर- गल कम्बल (गले के नीचे कम्बल के समान झूलती हुई मुलायम त्वचा) के द्वारा गाय की पहचान की जाती है।

प्रश्न-६ गो और गवय के बीच क्या भेद है?

उत्तर- गवय देखने में गाय के समान होती है, उसमें गल-कम्बल नहीं पाया जाता है तथा गुणकर्म में गो से भिन्न होती है।

प्रश्न-७ गोहत्या करने वालों की क्या गति होती है?

उत्तर- "गोवध करने वाले, उसका माँस खाने वाले उतने सहस्र वर्ष तक नरक में कठोर यातना प्राप्त करते हैं जितना कि उस भक्षण की गयी गाय के शरीर में रोम होते हैं।"

(श्रीचैतन्यचरितामृत आदि लीला १७/१५८)

प्रश्न-८ गो को कैसे प्रसन्न किया जा सकता है?

उत्तर- गो को स्वच्छ व शुद्ध चारा, जल, स्वच्छ वातावरण, संरक्षण व ममत्व के द्वारा प्रसन्न किया जा सकता है।

प्रश्न-९ गो हत्यारों के प्रति श्रीकृष्ण का व्यवहार कैसा होता है?

उत्तर- कृष्ण गोहत्या को किसी भी प्रकार से सहन नहीं करते हैं। कोई भी व्यक्ति जो गोहत्या के लिये उत्तरदायी होता है वह कठोर यातना प्राप्त करता है। ऐसा दुष्ट व्यक्ति आसुरी स्वभाव को प्राप्तकर कृष्ण के द्वारा सदा दण्डित होता है।

प्रश्न-१० गो सेवा के अधिकारी कौन हैं?

उत्तर- मानव मात्र गोसेवा का अधिकारी है।

प्रश्न-११ गो सेवा के विषय में अधिक शिक्षा कहाँ प्राप्त की जा सकती है?

उत्तर- कोई भी व्यक्ति आदर्श गोसेवा का शिक्षण श्रीहरिदास निवास गोशाला, वृन्दावन में प्राप्त कर सकता है। यहाँ पर गो की प्रीतिपूर्वक अनुकूल रूप से सेवा की जाती है।

प्रश्न-१२ मृत्यु के पश्चात् गायों की क्या गति होती है? क्या वे कृष्ण के साथ निवास करती हैं?

उत्तर- जीव को उसके अपने कर्म के अनुसार नाना प्रकार की योनियाँ प्राप्त होती हैं। अच्छे कर्म और ईश्वर की कृपा से गो के रूप में जन्म प्राप्त होता है। मृत्यु के पश्चात् गो कृष्ण के निवास-स्थल गोलोक को प्राप्त कर श्रीकृष्ण के साथ निवास करती हैं।

।। इति।।

श्रीहरिदास शास्त्री सम्पादिता ग्रन्थावली

क्रम सद्ग्रन्थ	मूल्य
१-वेदान्तदर्शनम् भागवतभाष्योपेतम्	१५०.००
२-श्रीनृसिंह चतुर्दशी	१०.००
३-श्रीसाधनामृतचन्द्रिका	२०.००
४-श्रीगौरगोविन्दार्चनपद्धति	२०.००.००
५-श्रीराधाकृष्णार्चनदीपिका	२०.००
६-७-८-श्रीगोविन्दलीलामृतम्	४५०.००
६-ऐश्वर्यकादम्बिनी	३०.००
१०-श्रीसंकल्पकल्पद्रुम	३०.००
११-१२-चतुःश्लोकीभाष्यम्, श्रीकृष्णभजनामृत	३०.००
१४-श्रीभगवद्भक्तिसार समुच्चय	३०.००
१५-ब्रजरीतिचिन्तामणि	४०.००
१६-श्रीगोविन्दवृन्दावनम्	३०.००
१७-श्रीकृष्णभक्तिरत्नप्रकाश	५०.००
१८-श्रीहरेकृष्णमहामन्त्र	५.००
१६-श्रीहरिभक्तिसारसंग्रह	५०.००
२०-धर्मसंग्रह	५०.००
२१-श्रीचैतन्यसूक्तिसुधाकर	१०.००
२२-श्रीनामामृतसमुद्र	१०.००
२३-सनत्कुमारसंहिता	२०.००
२४-श्रुतिस्तुति व्याख्या	१००.००
२५-रासप्रबन्ध	३०.००

२६-दिनचन्द्रिका	२०.००
२७-श्रीसाधनदीपिका	६०.००
२८-स्वकीयात्वनिरास, परकीयात्वनिरूपणम्	१००.००
२९-श्रीराधारससुधानिधि (मूल)	२०.००
३०-श्रीराधारससुधानिधि (सानुवाद)	१००.००
३१-श्रीचैतन्यचन्द्रामृतम्	३०.००
३२-श्रीगौरांग चन्द्रोदय	३०.००
३३-श्रीब्रह्मसंहिता	५०.००
३४-भक्तिचन्द्रिका	३०.००
३५-प्रमेयरत्नावली एवं नवरत्न	५०.००
३६-वेदान्तस्यमन्तक	४०.००
३७-तत्वसन्दर्भः	१००.००
३८-भगवत्सन्दर्भः	१५०.००
३९-परमात्मसन्दर्भः	२००.००
४०-कृष्णसन्दर्भः	२५०.००
४१-भक्तिसन्दर्भः	३००.००
४२-प्रीतिसन्दर्भः	३००.००
४३-दशःश्लोकी भाष्यम्	६०.००
४४-भक्तिरसामृतशेष	१००.००
४५-श्रीचैतन्यभागवत	२००.००
४६-श्रीचैतन्यचरितामृतमहाकाव्यम्	१५०.००
४७-श्रीचैतन्यमंगल	१५०.००
४८-श्रीगौरांगविरुदावली	४०.००

४६-श्रीकृष्णचैतन्यचरितामृत	१५०.००
५०-सत्संगम्	५०.००
५१-नित्यकृत्यप्रकरणम्	५०.००
५२-श्रीमद्भागवत प्रथम श्लोक	३०.००
५३-श्रीगायत्री व्याख्याविवृतिः	१०.००
५४-श्रीहरिनामामृत व्याकरणम्	२५०.००
५५-श्रीकृष्णजन्मतिथिविधिः	३०.००
५६-५७-५८-श्रीहरिभक्तिविलासः	६००.००
५६-काव्यकौस्तुभः	१००.००
६०-श्रीचैतन्यचरितामृत	२५०.००
६१-अलंकारकौस्तुभ	२५०.००
६२-श्रीगौरांगलीलामृतम्	३०.००
६३-शिक्षाष्टकम्	१०.००
६४-संक्षेप श्रीहरिनामामृत व्याकरणम्	८०.००
६५-प्रयुक्ताख्यात मंजरी	२०.००
६६-छन्दो कौस्तुभ	५०.००
६७-हिन्दुधर्मरहस्यम् वा सर्वधर्मसमन्वयः	५०.००
६८-साहित्य कौमुदी	१००.००
६६-गोसेवा	४०.००

बंगाक्षर में मुद्रित ग्रन्थ

१-श्रीबलभद्रसहस्रनाम स्तोत्रम्	१०.००
२-दुर्लभसार	१०.००
३-साधकोल्लास	५०.००

४-भक्तिचन्द्रिका	४०.००
५-श्रीराधारससुधानिधि (मूल)	२०.००
६-श्रीराधारससुधानिधि (सानुवाद)	३०.००
७-श्रीभगवद्भक्तिसार समुच्चय	३०.००
८-भक्तिसर्वस्व	३०.००
९-मन:शिक्षा	३०.००
१०-पदावली	३०.००
११-साधनामृतचन्द्रिका	४०.००
१२-भक्तिसंगीतलहरी	२०.००

अंग्रेजी भाषा में मुद्रित ग्रन्थ

१-पद्यावली (Padyavali)	२००.००
२-गोसेवा (Goseva)	५०.००
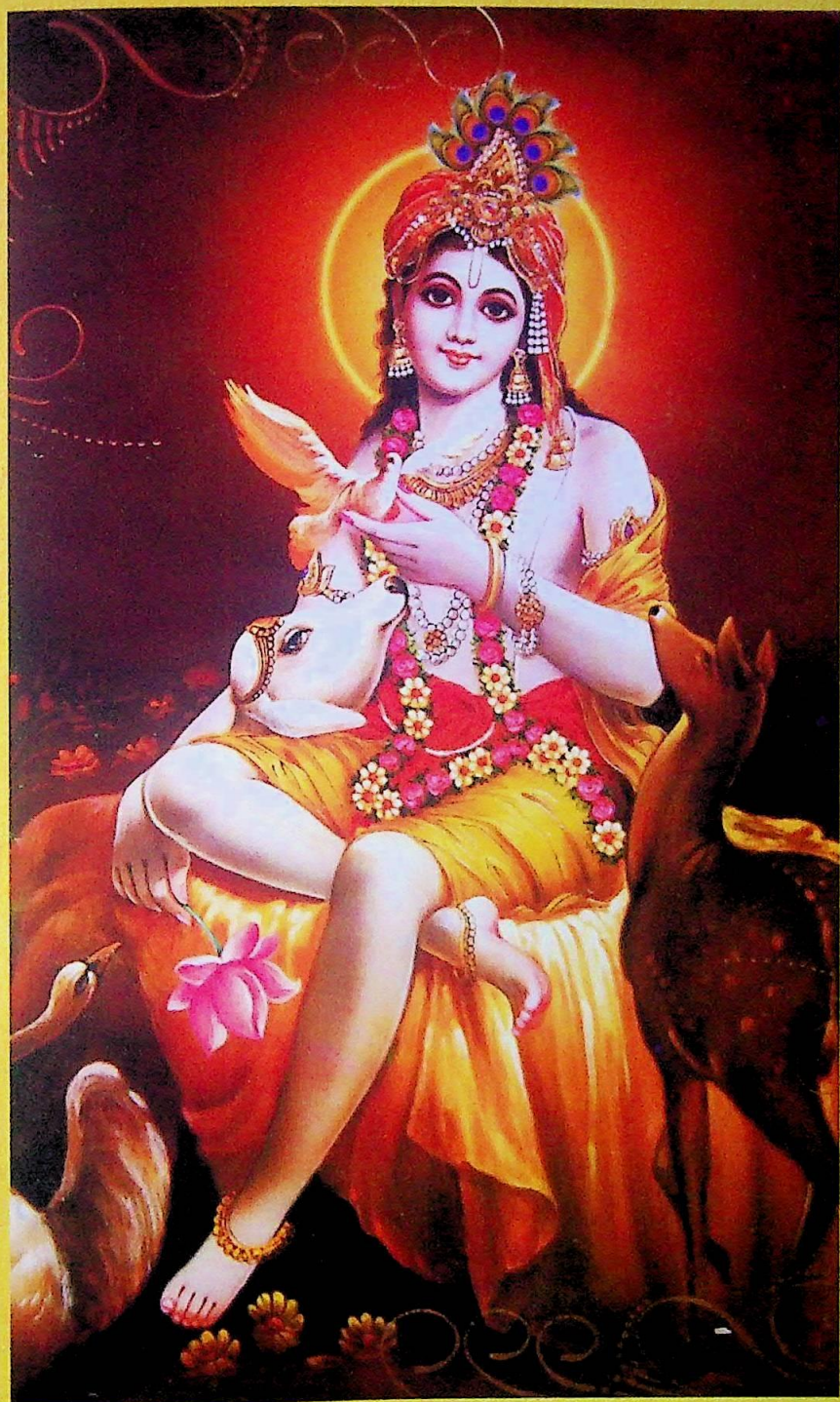
गव कण्डूयनं कुर्य्याद् गोग्रासं गोप्रदक्षिणम्।
गोषु नित्यं प्रसन्नासु गोपालोऽपि प्रसीदति।।

गो के अंग में विद्यमान वाह्य कीट को हटाना चाहिए, उनको भोजन प्रदान करना चाहिए तथा उनकी परिक्रमा करनी चाहिए। गो को नित्य प्रसन्न रखने से शीघ्र ही गोपाल

सम्पर्क –
श्रीहरिदास शास्त्री
श्रीहरिदास निवास, प्राचीन कालीदह, वृन्दावन (मथुरा) उ० प्र०
फोन : ०५६५–३२०२३२२, ३२०२३२५